हिन्दी - पुष्प

(साउथ एशिया टाइम्स का हिन्दी परिशिष्ट)

वर्ष-५ अङ्क-९ फ़रवरी, २००९

सम्पादकीय

लालच बुरी बला है

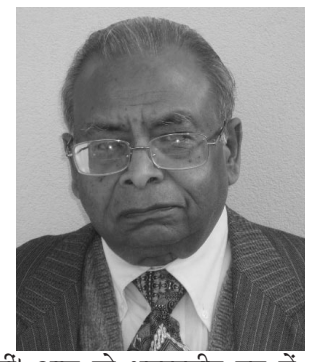

हिन्दी में एक बहुत पुरानी कहावत है - "लालच बुरी बला है"। अनेक ऐसी कहानियाँ हैं जो यह कहावत चरितार्थ करती हैं। परन्तु, अस्सी के दशक में अमेरिका में एक नया नारा लगा-"लालच अच्छा है"। कई टेलीविज़न कार्यक्रम के सूत्रधारों ने इस नारे के समर्थन में तर्क प्रस्तुत किये और इस विषय पर 'वाल-स्ट्रीटं जैसे कुछ अँग्रेज़ी चलचित्र भी बने जिन में यह दर्शाया गया कि यदि जीवन में प्रगति करना चाहते हो तो धन-समृद्धि का लालच करो क्योंकि लालच के बिना तुम वह सब करने के लिये तैयार नहीं होगे जो धन-वैभव को प्राप्त करने के लिये आवश्यक होता है। परिणाम यह हुआ कि धन-लाभ के लालच में लोगों ने नैतिकता और समझ-बूझ को ताक पर रख दिया। मकान ख़रीदने के लिये कर्ज़ देने वाली संस्थाओं में होड़ लग गयी कि कौन सबसे अधिक कर्ज़ दे सकता है क्योंकि जो सबसे अधिक कर्ज़ देगा, ब्याज में उसे उतनी अधिक आमदनी होगी। इस मान्यता के आधार पर इन संस्थाओं ने, जिन में बड़े-बड़े बैंक भी शामिल थे, अधाधुंध कर्ज़ देना शुरू कर दिया और ऐसे लोगों को कर्ज़ दिया, जिनकी हैसियत ही नहीं थी कि वे यह कर्ज़ चुका सकें। परिणामस्वरूप अनेक आर्थिक संस्थाएँ दिवालिया हो गयीं। आज के भूमण्डलीय युग में, जब सम्पूर्ण विश्व की अर्थ-व्यवस्था एक दूसरे पर निर्भर करती है, अमेरिका में जन्मी इस समस्या से विश्व का कोई भी देश अछूता न रहा और सम्पूर्ण विश्व एक अर्थ-संकट से त्रस्त हो गया। पहले कहा जाता था कि 'बाज़ार' को स्वतंत्र छोड़ दो, वह अपने आपको नियंत्रित कर लेगा। पर हाल में हुई घटनाओं से यह स्पष्ट हो गया है कि "लालच बुरी बला है"। इसी लालच के चक्कर में 'सत्यम' जैसी कम्पनी ने दुनिया भर में भारत का नाम डुबोया। लालच पर नियंत्रण आवश्यक है।

हिन्दी-पुष्प के इस अङ्क में कुछ रोचक कविताएँ हैं, 'वी०सी०ई० हिन्दी पढ़ने के मेरे अनुभव' श्रृंखला का तीसरा लेख है, कहानी 'समय शेष' का पहला भाग है। साथ में 'हँसने की बारी है' तथा सूचनाएँ भी हैं। आशा है आपको यह अङ्क पसंद आएगा। आपके विचारों, सुझावों तथा रचनाओं का हम स्वागत करेंगे।

-दिनेश श्रीवास्तव

लेखकों से निवेदन

१. कृपया अपनी रचनाएँ (कहानियाँ, कविताएँ, लेख, चुटकुले, मनोरंजक अनुभव आदि) निम्नलिखित पते पर भेजें -

डा० दिनेश श्रीवास्तव, १४१ हायट स्ट्रीट. रिचमंड, विक्टोरिया ३१२१

(Dr. Dinesh Srivastava, 141 Highett Street, Richmond, Victoria 3121)

२. हस्तलिखित रचनाएँ स्वीकार की जाएँगी परन्तु इलेक्ट्रानिक रूप से हिन्दी-संस्कृत फ़ांट में रचनाएँ भेजें तो उनका प्रकाशन हमारे लिए अधिक सुविधाजनक होगा।

ई-मेल से रचनाएँ भेजने का पता है-

dsrivastava@optusnet.com.au

३. अपनी रचनाएँ भेजते समय अपनी रचना की एक प्रतिलिपि अपने पास अवश्य रखें।

नया साल मुबारक सब को

-अपर्णा पाटिल, बेरिक, विक्टोरिया

नया साल मुबारक़ सब को
आओ नये साल का
स्वागत करें ख़ुशी से
डाल-डाल पर पंछी गा रहे हैं
स्वागत भरा गीत।
हर कली ख़ुशी से गुनगुना रही है
हवा चारों ओर नाच रही है।

पतझड़ का जाना, वसंत का आना
प्रतीक है, आरम्भ हुआ नया साल।
सब ओर अशांति छा रही है
इंसान, इंसान का दुश्मन बन गया है
धरती माँ कह रही है-
बच्चो, तुम लड़ो मत इस जीवन में
हर दुख को भुला कर
स्वागत करो नये साल का ।

देखो उस तारे को,
जो अंधेरे में भी चमकता है।
देखो उस चाँद को
जो दूध जैसा उजाला देता है।
दुख से न घबरा इंसान
ईश्वर ने बनाया है
सुख व दुख का संगम

नदी जैसे आगे चलना है।
पंछी जैसे आगे उड़ना है
फूल जैसे महकना है
उम्मीद को जगाना है
सुख-दुख बाँटना है
ऐसे हमें नये साल का
स्वागत करना है।

शुभ कामना और चेतावनी - २००९

-राजेन्द्र चोपड़ा, मेल्बर्न

नए साल की शुभ कामना सब को
जो भी हुआ मत दोष दो रब को
हर कर्मशील ने सब कुछ पाया
हाथों पर हाथ धरे बैठे तो पछताया

बीते साल की बहुत सी खट्टी यादें
अत्याचार बहुत किए जेहादी बेक़ायदे
दिल की कविता आज सच बतला दे
जीना है तो हर जुल्म का बदला ले

काव्य-कुंज

बदलेंगे साल पर शैतान न बदलेंगे
ख़ुद ही आतंकवादी हालात ना बदलेंगे
प्रार्थना से हैवानों के विचार न बदलेंगे
बदलने से बदलेंगे हर सिरफिरे पगले

धर्म के नाम पर हुआ बहुत झमेला
बुश-मुश के बाद लादनपंथी का मेला
मुम्बई शहर में खून की होली खेला
जागो विश्व की जनता
नहीं निद्रा की बेला

शेयर-बाजार भी बना शैतानों का मेला
समय है काली कारस्तानी का आज
यदि मूर्ख करतूतों से ना आएगा बाज
तो पिछले से भी
बदतर होगा अगला साल

बन कर्मशील मिटा दो हर दुश्मन आज
बातों से लातों के भूत ना आऐंगे बाज
अब बदलो हालात
बागडोर ले अपने हाथ
राजन मिटाओ आतंकवाद
वरना होगा दुश्हाल

पति

- रचना श्रीवास्तव, डल्लास, अमेरिका

पतियों की क्या बात कहें,
ये हमें यूँ बरगलाते हैं
घुमा-फिरा कर जैसे भी हो,
बात अपनी ही मनवाते हैं।

एक बार कहने पर,
कोई बात ये सुनते नहीं
यदि हों कम्प्यूटर पर तो
हाँ-हूँ भी करते नहीं
इसीलिये हर बात हमें
बार-बार दोहरानी पड़ती है
फिर कहते हैं कि
पत्नियाँ अधिक बोलती हैं

सामने सभी के तो
बहुत सीधे नज़र आते हैं
पर अकेले में,
पत्नी पर बहुत गुर्राते हैं
तुलना हमारी बड़े आराम से
टी०वी० से करते हैं
पर रिमोट सदा
अपने ही पास रखते हैं

टी०वी० तो रंगीन ही
सदा चाहिये इनको
पर यदि पत्नी रंग-मिज़ाज़
हो जाये तो
शक की नज़र से देखते हैं।

शादी से पहले तो
मजनू नज़र आते हैं
बाद में बन जोरू के गुलाम
हमको लुभाते हैं
फिर शहंशाह बन कर
हम पर हुक़्म चलाते हैं
और गब्बर सिंह बन कर
हमको डराते हैं।

पहले कहा करते थे
तुम बोलती हो तो मिश्री सी घुलती है
अब कहते हैं
क्या दिन भर काँव-काँव करती हो
पहले कहते थे
'हनी' मैं घर आ गया
अब कहाँ की 'हाय',
कहाँ की 'हनी'
कहते हैं, मुन्ने की माँ,
खाना क्या बनाया?
यही खाना जो
होटल से भी बढ़िया लगता था
आज उसी में
हज़ारों कमियाँ निकालते हैं
कभी धनिया, कभी मिर्चा,
कभी नमक कम बताते हैं

स्वभाव इनका मौसम सा बदलता है
कभी नरम, कभी गरम
तो कभी गरमा-गरम होता है
सास पत्नी की आए तो
बहुत ख़ुश हो जाते हैं
स्वयं की सास आ जाए तो
नाक-भौं चढ़ाते हैं

गाड़ी एक ही जगह पर
बार-बार घुमाते हैं
रास्ता पूछने को कहो
तो फ़रमाते हैं
आस-पास ही है,
बस अभी पहुँच जाते हैं

ये शादी-शुदा होने का
फ़ायदा भी ख़ूब उठाते हैं
बात करते हैं पत्नी से और
नज़र कहीं और मिलाते हैं
जो था बचा-खुचा,
वह विदेश में ला कर पूरा कर देते हैं
आया, मेहतरानी और
बाई का काम हम से करवाते हैं।

वर्ष २००८ की वी०सी०ई० हिन्दी परीक्षा के परिणाम

(आप हिन्दी पुष्प के पिछले अङ्क में दो विद्यार्थियों के वी०सी०ई० हिन्दी पढ़ने के अनुभव पढ़ चुके हैं। लीजिये अब प्रस्तुत हैं, इसी विषय पर हिन्दी में इस वर्ष, वी०सी०ई० हिन्दी की परीक्षा में सर्वोच्च अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थी के अनुभव-सम्पादक)

वी०सी०ई० हिन्दी पढ़ने के मेरे अनुभव

(३)

दो वर्ष पूर्व, जब मैंने अपने परिवार सहित ऑस्ट्रेलिया देशान्तरण किया था तो उसका मुख्य कारण यह था कि मैं यहाँ के एक उत्तम विश्वविद्यालय में प्रवेश पा कर अपने भविष्य के सपने साकार करना चाहती थी। परन्तु यहाँ पहुँच कर मुझे बहुत झुंझलाहट लग रही थी। विद्यालय में सहपाठी तथा अध्यापक सभी मृदुभाषी थे परन्तु फिर भी सब के साथ अपने को जोड़ने में कठिनता अनुभव कर रही थी। अपने जैसे लोगों से अपनी भाषा में सम्पर्क बनाये रखने का मन करता था। उसी दौरान एक भारतीय मित्र से मुझे पता चला कि हमारे अपने विद्यालय में ही हर मंगलवार को विक्टोरियन स्कूल ऑफ़ लैंग्वेजेज़ द्वारा हिन्दी की कक्षाओं का संचालन होता है। बस, तभी मुझे विश्वास हो गया कि इस अजनबी देश में भी अपनी स्वदेशी अस्मिता को परिपुष्ट करने का हिन्दी के अध्ययन से अच्छा कोई और साधन नहीं हो सकता। यह जान कर और भी खुशी हुई कि हिन्दी वी०सी०ई० के विषय के रूप में पढ़ी जा सकती है। इस से भारत की राष्ट्रभाषा में न केवल निपुणता प्राप्त करना संभव था वरन् विश्वविद्यालय में प्रवेश के लिये बोनस अंक भी प्राप्त किये जा सकते थे। यह तो सोने में सुहागा वाली बात हुई। फिर क्या था, मैंने अगले मंलवार से ही हिन्दी कक्षा में प्रवेश ले लिया।

भारत में परीक्षा में सफलता प्राप्त करने के लिये रट्टा मारना आवश्यक होता है - यहाँ तक कि परीक्षार्थी पूरे-पूरे निबन्ध रट डालते हैं। विद्यार्थियों को अपने विचार व्यक्त करने के अवसर बहुत कम मिलते हैं परन्तु यहाँ ऐसा नहीं होता है। इसलिये मैं यहाँ की शिक्षा-प्रणाली से बहुत प्रसन्न हूँ। यहाँ मुझे अपने सहपाठियों के साथ विचार-विमर्श करने की पूरी स्वतंत्रता मिली। परीक्षा के समय अभ्यास करने का जोश और उत्साह रहता था। भला संगीत वय नृत्य, त्योहार तथा परिवार और मित्रों से सम्बन्ध जैसे विषय पढ़ने में कैसी झिझक और कठिनता? कक्षा में प्रतिस्पर्धात्मक वातावरण तो था ही परन्तु इसके कारण सहपाठियों के मन में बुरी भावनाएँ नहीं झलकती थीं और न ही इसका हमारी मित्रता पर बुरा प्रभाव पड़ता था।

निरंतर दो वर्षों तक वी०सी०ई० पाठ्यक्रम के अंतर्गत हिन्दी पढ़ने का मेरा अनुभव बेहद ज्ञानप्रद और लाभदायक रहा है। इसे अनोखा, सरल व मज़ेदार बनाने का मुख्य श्रेय जाता है मेरी अध्यापिका श्रीमती मंजीत ठेठी को, जिन्होंने हर समय मेरी सहायता की और उचित मार्गदर्शन किया। फिर चाहे वे दूरभाष पर हों या उन्हीं के घर पर कुछ समस्याओं को हल करने का निमंत्रण।

ईश्वर और माता-पिता के आशिर्वाद तथा श्रीमती ठेठी के नि:स्वार्थ योगदान के कारण ही मैंने इस भाषा में उत्तम रूप से ज्ञान ग्रहण किया है और हिन्दी की वी०सी०ई० परीक्षा में उच्चतम अंक प्राप्त कर के अपने भविष्य को साकार करने के पथ पर अग्रसर हो सकी हूँ। अंत में मैं आशा करती हूँ कि मेरे इस अनुभव से प्रेरित हो कर अन्य विद्यार्थी भी हिन्दी भाषा पढ़ने का संकल्प करेंगे और अपने उद्देश्य में सफलता प्राप्त करेंगे।

- **जानकी त्रिवेदी,**

कक्षा ११, ग्लेन वेवर्ली सेकंडरी कॉलेज, ग्लेन वेवर्ली

कहानी

समय शेष (भाग १)*

- युगल

सवा सात बज चुके थे, लेकिन दूध की वैन अभी नहीं आई थी। अमूमन साढ़े छह और सात के बीच आ जाती थी और पार्क के गेट के पास लगती थी। देर के कारण ऊबे-से लोग समय की पाबंदी पर अपने मंतव्य प्रकट कर रहे थे। दशरथ बाबू हाथ में पॉली बैग लिये दो मिनट तक चहलकदमी करते रहे। फिर वह पार्क में दाखिल हुये और एक सीमेंट वाली बेंच को कंधे पर रखे तौलिए से झाड़कर बैठ गये। तभी वह वृद्धा औरत आई। दशरथ बाबू ने मुस्कराकर उसकी ओर देखा। यह आमंत्रण था कि आओ, बैठो! वृद्धा आकर बैठ गई।

इधर दो सप्ताह से यह वृद्धा भी इस बूथ से दूध लेने आती है। इंतजार में कई बार दोनों पास-पास बैठते हैं। अक्सर यह हुआ है कि अगर वह पहले से आई होती है और दशरथ बाबू देर से पहुचते हैं, तो उन्हें देख कर वह आदरपूर्वक खड़ी हो जाती है। फिर दोनों बैठ जाते हैं या दशरथ बाबू पहले से बैठे होते हैं तो उसे देख कर थोड़ा खिसक कर उसके लिये जगह बना देते हैं। इस शिष्ट औपचारिकता के अतिरिक्त दोनों में कभी कोई बात नहीं हुई। दोनों में से कोई एक-दूसरे के बारे में कुछ नहीं जानता। कालोनी में आते-जाते दोनों अक्सर एक-दूसरे को देखते रहे हैं।

वृद्धा के बैठते ही वैन आ गई और इंतजार में बैठे लोग उतावली में वैन की ओर बढ़ गए। दूध ले कर जब दशरथ बाबू आगे आए, तो देखा, वृद्धा पाँव की हवाई चप्पल घसीटती जा रही है और चप्पल पाँव से निकल-निकल जा रही है। दशरथ बाबू के मुँह से अनायास ही निकल गया- "क्या हुआ?"

वृद्धा ने रुआँसी होकर दशरथ बाबू की ओर देखा- "यह चप्पल..."

दशरथ बाबू ने देखा चप्पल पुरानी है, जिस पर अंगूठे और एड़ी के घिसने के दाग हैं। उसका फ़ीता टूट गया था। उन्होंने कहा-

"इसे पहन कर तो जाया नहीं जा सकता। कैसे जाएँगी आप?"

"चली जाऊँगी"

"नंगे पाँव!" दशरथ बाबू ने देखा, इस उम्र में भी एड़ियाँ चिकनी और मुलायम हैं, लाल हैं। बोले- "ऐसा कीजिए, आप मेरी चप्पल ले लीजिए।"

वृद्धा ने प्रश्नसूचक दृष्टि से दशरथ बाबू को देखा--"और आप नंगे पाँव ...!"

वृद्धा की आँखों में दशरथ बाबू की आँखें ठहर गईं और वह बोले- "मैं तो निकट ही रहता हूँ एम २४ में।"

दोनों की यह पहली बातचीत थी। दशरथ बाबू ने पहली बार आज वृद्धा की उम्र का अंदाज लगाया, होगी कोई साठ वर्ष के आस-पास। बाल प्राय: सब पक चुके हैं। फिर मन ने इंकार किया, बाल पकने से क्या होता है! काठी नहीं कहती कि साठ की होंगी।

घर में दूध का पॉली बैग हाथ से लेती हुई बहू ने पूछा-"बाबूजी, आपकी चप्पल?"

दशरथ बाबू पहले मुस्कराए, फिर हँस पड़े। क्या बोलें? बहू ने उनसे तो कुछ नहीं कहा, लेकिन आफ़िस जाते पति से बोली-"बाबूजी चप्पल जाने कहाँ छोड़ आए हैं। लौटते वक़्त नई लेते आइएगा।"

वृद्धा अपने घर में संकुचित-सी दाखिल हुई। अपनी टूटी चप्पल और पाँव वाली चप्पल एक ओर रखकर वह रसोई में दूध रखने गई। बाहर निकली, तो देखा- बहू चप्पलों को देख रही थी-"माँ जी, यह चप्पल कैसे टूटी?"

"पीछे चल रहे आदमी का पाँव चप्पल पर पड़ गया था।"

"और आप उसकी मर्दाना चप्पल ले कर चली आईं?"

"नहीं, वह जो एम-२४ में रहते हैं, उन्होंने अपनी चप्पल दे दी।"

"वाह रे मेहरबानी! और आप उसकी चप्पल पहन कर चली आईं? नंगे पांव आने में आप के तलवे मैले हो जाते!"

बहू के स्वर की कटुता हृदय बेधक थी। छोड़िए, यह सब घर की दीवारों के अंदर की बात है।

(क्रमश:)

*** आजकल के सौजन्य से**

महत्वपूर्ण तिथियाँ

लालटेन का चीनी त्योहार/ वृक्षों के नये वर्ष का यहूदी त्योहार (९ फ़रवरी), वैलेन्टाइन-दिवस (१४ फ़रवरी), महाशिवरात्रि (२३ फ़रवरी), पैन केक-दिवस (२४ फ़रवरी), ईसाइयों का ४० दिन व्रतारंभ-लेंट (२५ फ़रवरी), मिलाद-उन-नबी, पैग़म्बर मुहम्मद का जन्म-दिवस/ श्रमिक दिवस, ऑस्ट्रेलिया (९ मार्च), माघ-पूजा (बुद्ध-धर्म)/ होला-मोहल्ला (सिक्ख)/ होली (११ मार्च), नानकशाही - सिक्खों के नये वर्ष का आरम्भ (१४ मार्च)।

सूचनाएँ

१. साहित्य-संध्या/होली धमाका/हास्य कवि सम्मेलन (शनिवार, ७ मार्च)
स्थानीय तथा अंतरदेशीय अतिथि साहित्यकारों द्वारा सुनिये और सुनाइये - हास्य कविताएँ, कविता-पाठ, चुटकुले, गुदगुदी, कहानियाँ, मनोरंजक घटनाएँ।
स्थान - फ़िलिस होर रूम, क्यू सिटी लाइब्रेरी, कोथम रोड और सिविक ड्राइव के नुक्कड़ पर
क्यू-३१०१ (मेलवे संदर्भ ४५ डी ६)
समय - रात के ७.३० बजे से १०.३० बजे तक। प्रवेश नि:शुल्क है।
मुफ़्त चाय-पानी का प्रबन्ध है।
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क कीजिये -
हरिहर झा (९५५५-४९२४),
ई-मेल- hariharjha2007@gmail.com
सुभाष शर्मा (०४३३)१७८३७७,
ई-मेल- subhash.sharma@rmit.edu.au
नलिन शारदा (०४०२)१०८५१२
ई-मेल- nalinksharda@ gmail.com

२. होली-मेला - आयोजक ऑस्ट्रेलियन इण्डियन इनोवेशनस् इंक (रविवार, १५ मार्च)
स्थान - सैंडाउन रेस कोर्स, मेलबर्न (मेलवे संदर्भ ८० सी ९)
समय - सुबह १०.०० बजे से शाम के ६.०० बजे तक।
अधिक जानकारी के लिए योगेन लक्ष्मण को (०४०३) ३३७ १४२ पर फ़ोन कीजिए।

३. हरभजन मान का पंजाबी संगीत कार्यक्रम - आयोजक ऑस्ट्रेलियन इंस्टीट्यूट ऑफ़ टेक्नालोजी
(रविवार, २२ मार्च)
स्थान - हैमर हॉल, मेल्बर्न आर्ट्स्-सेन्टर, सेंट किल्डा रोड, मेल्बर्न।
समय - शाम के ७ बजे से प्रारम्भ
अधिक जानकारी के लिए गोल्डी को (०४२४) १९६ ५०० अथवा निक को (०४२०) ३०२ ०४६ पर फ़ोन कीजिए।

अब हँसने की बारी है

१. भिखारी और गर्लफ्रेंड

भिखारी (वर्मा जी से) - साहब २० रुपये दे दीजिये, कॉफ़ी पीनी है।
वर्मा जी (भिखारी से) - लेकिन, कॉफ़ी तो १० रुपये में आ जाती है।
भिखारी (वर्मा जी से) - पर मेरे साथ मेरी गर्लफ्रेंड भी तो है।
वर्मा जी (भिखारी से) - अच्छा, भिखारी हो कर भी गर्लफ्रेंड बना ली!
भिखारी (वर्मा जी से) - नहीं जनाब, गर्लफ्रेंड ने भिखारी बना दिया।

२. पत्नी और बेगम

सुरेश (रमेश से) - रमेश, क्या तुम जानते हो कि पत्नी को बेगम क्यों कहते हैं?।
रमेश (सुरेश से) - हाँ, विवाह के उपरांत, सारे ग़म पति को मिलते हैं। इसलिए पत्नी बेगम हो जाती है।

३. विवाह का प्रस्ताव

एक वृद्ध विधुर, रामनाथ और विधवा कलावती में गत पाँच वर्षों से अच्छी मित्रता थी। आख़िरकार, रामनाथ ने कलावती के सामने विवाह का प्रस्ताव रख दिया। कलावती बहुत प्रसन्न हुई और उसने तत्काल हाँ कह दिया।
अगली सुबह जब रामनाथ जागा तो उसे ठीक से याद नहीं आया कि विवाह के प्रस्ताव के बारे में कलावती ने क्या उत्तर दिया था। उस ने कलावती को फ़ोन किया और पूछा कि कल मेरे विवाह के प्रस्ताव के बारे में तुमने क्या उत्तर दिया था- हाँ या न?
कलावती ने कहा- ईश्वर का लाख-लाख शुक्र है कि तुम ने फ़ोन कर लिया। उत्तर में तो मैंने हाँ ही कहा था पर मुझे यह नहीं याद था कि किस से मैंने हाँ कहा था।